द्विध्रुवीय विकृति या उन्माद-विषाद विकृति (Bipolar Disorder or Manic-Depression Disorder)

पहले मनोवैज्ञानिकों का मत था कि उन्माद तथा विषाद दो अलग-अलग मानसिक रोग हैं। लेकिन सर्वप्रथम Falret और Baillarger ने यह बताया कि ये दो भिन्न मानसिक रोग नहीं हैं, बल्कि एक ही मानसिक रोग के दो लक्षण हैं। इसके लिए 1889 में Kraeplin ने उत्साह-विषाद विकृति शब्द का प्रयोग किया। Kraeplin के अनुसार — इसमें रोगी एक ही रोग से ग्रस्त होता है, जिसके दो विरोधी लक्षण होते हैं। अत्यधिक प्रसन्नता की अवस्था या उन्माद की अवस्था में विचारों की उड़ान, अधिक मानसिक एवं शारीरिक सक्रियता तथा उत्साह के लक्षण प्रकट होते हैं। इसके विपरीत विषाद की अवस्था में रोगी में मानसिक अवसाद, तर्कहीन विचार, मानसिक एवं शारीरिक सक्रियता में कमी आदि के लक्षण दिखते हैं। इसलिए इसे द्विध्रुवीय विकृति भी कहा जाता है।

DSM-IV में द्विध्रुवीय विकृति के निम्नांकित तीन प्रकार बतलाये गये हैं —

- Cyclothymic Disorder
- Bipolar-I Disorder
- Bipolar-II Disorder.

■ **Cyclothymic Disorder** — यह विकृति मनोदशा में विचलन की एक चिरकालिक अवस्था को कहा जाता है, जिसमें अल्प विषाद एवं अल्पोन्माद (Hypomania) के लक्षण पिछले दो वर्षों से व्यक्ति में अवश्य ही बने रहते हैं। ये कम गंभीर प्रकार हैं। DSM-IV में इस विकृति के पहचान हेतु निम्नांकित चार मापदंड तय किये गये हैं —

→ कम-से-कम दो वर्षों में अनेक बार रोगी द्वारा अल्पोन्माद के लक्षण और अनेक बार विषादी मनोदशा दिखलायी गयी हो।

→ दो वर्षों की अवधि में 2 महीना से ज्यादा ऐसी कोई अवधि न हो जिसमें रोगी इन लक्षणों को नहीं दिखलाया हो।

→ कोई बड़ी विषादी घटना का अनुभव रोगी को हुआ हो।

→ प्रथम दो वर्षों में कोई उन्मादी घटना का अनुभव रोगी को नहीं हुआ हो।

साइक्लोथाइमिक विकृति की शुरुआत किशोरावस्था या आरंभिक व्यस्कावस्था में होता है। अध्ययनों से पता चला है कि इस रोग से ग्रसित कुछ व्यक्ति आगे चलकर द्विध्रुवीय विकृति से ग्रसित हो जाते हैं।

Bipolar-II विकृति — द्विध्रुवीय दो विकृति में DSM-IV के अनुसार निम्नांकित तीन प्रमुख लक्षण होते हैं —

→ एक या एक से अधिक बड़ा विषादी घटना का अनुभव हुआ हो।

→ कम-से-कम एक अल्पोन्मादी घटना का अनुभव हुआ हो। अल्पोन्मादी घटना वैसी घटना को कहा जाता है जब व्यक्ति को एक खास अवधि तक बढ़ा-चढ़ा एवं चिड़चिड़ा मनोदशा का अनुभव हुआ होता है, परंतु इससे व्यक्ति के सामाजिक एवं व्यावसायिक कार्यों में बाधा उत्पन्न नहीं होता है और व्यक्ति को अस्पताल में भर्ती करके उपचार की आवश्यकता नहीं होती है।

→ ऐसे रोगियों में तीव्र उन्माद की घटना का कोई अनुभूति नहीं हुई होती है।

इस तरह द्विध्रुवीय दो विकृति में अल्पोन्मादी घटना तथा बड़ा विषादी घटना बारी-बारी से होते पाये जाते हैं।

Bipolar-I Disorder — द्विध्रुवीय-I विकृति एक ऐसी विकृति है जिसमें रोगी एक या एक से अधिक तीव्र उन्मादी अवस्था तथा एक या एक से अधिक बड़ा विषादी अवस्था का अनुभव किया होता है। इस विकृति में अधिकतर रोगियों में उन्मादी तथा विषादी घटनाएँ बारी-बारी से होते हैं, परंतु कुछ रोगियों को मिश्रित घटनाओं का भी अनुभव होता है। अर्थात् एक ही दिन में उन्मादी तथा विषादी दोनों ही लक्षण दिखते हैं। उन्माद से तात्पर्य एक ऐसी मानसिक स्थिति से होता है, जिसमें रोगी की मनोदशा बढ़ी-चढ़ी होती है, विचारों का उड़ान ऊँचा होता है तथा मनोप्रेरक क्रियाएँ (psychomotor activities) अधिक होते हैं। विषादी अवस्था के लक्षण वही होते हैं जो बड़ा विषादी विकृति के होते हैं।

Scanned with CamScanner

DSM-IV में उन्मादी घटना (manic episode) या उन्माद के मुख्य लक्षण निम्नांकित बतलाये गये हैं —

APPOINTMENTS → एक सप्ताह तक रोगी की मनोदशा असामान्य ढंग से काफी बढ़ा-चढ़ा एवं चिड़-चिड़ा बना हुआ होता।

→ मनोदशा व्याकुल की अवधि में निम्नांकित में से तीन या अधिक लक्षण जरूर उपस्थित हो और यदि मनोदशा में सिर्फ चिड़चिड़ापन हो, तो चार लक्षण अवश्य हो —

- बढ़ा हुआ आत्म-सम्मान (Inflated Self-Esteem)
- नींद की कमी।
- पहले की तुलना में अधिक बातूनी होना।
- विचारों में उड़ान होना।
- ध्यान भंगता (distractibility) अर्थात् महत्वहीन चीजों की ओर जल्द ध्यान चला जाना।
- मनोपेशीय क्रियाओं (Psychomotor activities) में वृद्धि।
- उन क्रियाओं में अत्यधिक भागीदारी दिखाना जो आनन्द तो देते हो, परंतु उनमें अधिक जोखिम भी शामिल होता

→ उपर्युक्त लक्षण ऐसे हो जो व्यक्ति के सामाजिक एवं व्यवसायिक समायोजन में बाधा उत्पन्न करता होता

→ उक्त लक्षण का कारण कोई ड्रग, या औषधि न होता

स्पष्टतः कहा जा सकता है कि द्विध्रुवीय-I विकृति की गंभीरता द्विध्रुवीय-II व्यक्ति से अधिक है तथा द्विध्रुवीय-I विकृति में उन्मादी व्यवहार की गंभीरता द्विध्रुवीय-II विकृति के अपेक्षा अधिक होती है

द्विध्रुवीय विकृति के कारण →
(Etiology of Bipolar Disorder) —

- # जैविक कारक (Biological factors)
- # जननिक कारक (Genetic factors)
- # मनोवैज्ञानिक कारक (Psychological factors)

Scanned with CamScanner

जैविक कारक — कई अध्ययनों से स्पष्ट हुआ है कि विषाद के समान उन्मादी घटनाओं की अनुभूति में भी न्यूरोट्रांसमीटर की भूमिका होती है। अध्ययनों में यह पाया गया है कि नोरइपाइनफ्राइन (Nor-epinephrine) की मात्रा अधिक होने पर व्यक्ति में उन्मादी अनुभूतियाँ अधिक होती हैं तथा निम्न स्तर से विषाद की उत्पत्ति होती है।

Meltzer, का मत है कि उन्माद एवं विषाद का कारण पूरे मस्तिष्क में न्यूरोन्स झिल्लियों में सोडियम आयन्स (Na⁺) का दोषपूर्ण संचार है। जिसका परिणाम यह होता है कि व्यक्ति की मनोदशा में एक छोर से दूसरे छोर तक का परिवर्तन होता है।

कुछ विद्वानों ने आन्तरिक शारीरिक उपद्रवों को भी इस रोग का कारण माना है। अंतःस्रावी ग्रंथियों में गड़बड़ी, पाचन क्रिया तथा रक्त-चाप में गड़बड़ी आदि के कारण से भी यह रोग उत्पन्न होने में सहायक होता है।

जननिक कारक — कई अध्ययनों में यह पाया गया है कि द्विध्रुवीय विकृति का कारण आनुवंशिकता होता है। यह उन व्यक्तियों में अधिक पाया जाता है, जिनके माता-पिता या अन्य संबंधियों में पहले से रोग हो चुके होते हैं।

कुछ विद्वानों ने शारीरिक बनावट को भी इस रोग का कारण माना है। क्रेशमर ने पिकनिक (pyknic) प्रकार के व्यक्तित्व वाले व्यक्तियों में इस रोग के होने की संभावना अधिक बताया है। इसप्रकार के व्यक्ति नाटे एवं मोटे होते हैं। शेल्डन ने मेसोमॉर्फिक एवं एण्डोमॉर्फिक प्रकार के व्यक्तियों को इस रोग का शिकार शीघ्र हो जाने वाला बताया है।

मनोवैज्ञानिक कारक — कुछ मनोवैज्ञानिकों ने दोषपूर्ण प्रारंभिक विकास तथा वर्तमान जटिल एवं तीव्र दबावपूर्ण अवस्थाओं को इस रोग के उत्पत्ति में सहायक बतलाया है। फ्रायड ने द्विध्रुवीय विकृति के मानसिक कारणों की व्याख्या अपने मनोलैंगिक विकास के सिद्धान्त के आधार पर की है।

कई अध्ययनों से इस बात की पुष्टि हुई है कि द्विध्रुवीय विकृति का कारण तनाव भी होता है। अभावी घटनाओं के लगातार यो निराशाई घटनाओं का कारण जिन्दगी में कुछ-न-कुछ तनाव का होना ही होता है। तनावपूर्ण घटनाएँ उन व्यक्तियों में अभावी-अवस्था उत्पन्न कर देता है जिनमें द्विध्रुवीय विकृति का गुण इतिहास होता है, यह भी देखा गया है।

McDougall का मत है कि यह रोग आत्म-सम्मान एवं आत्म-समर्पण की प्रवृत्तियों के असंतुलित विकास के कारण उत्पन्न होता है। Adler ने आत्म-प्रतिष्ठा एवं हीन-भावना को इस रोग का कारण माना है। उनका मानना है कि जब इनका प्रकाशन सही रूप में नहीं होता है तो इसका दमन हो जाता है और उससे हीन-भावना व्यक्ति में विकसित हो जाती है तथा वह द्विध्रुवीय विकृति से ग्रस्त हो जाता है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि द्विध्रुवीय विकृति के होने के कई कारण हैं। जिसमें जैविक एवं जननिक कारक अधिक महत्वपूर्ण हैं।

द्विध्रुवीय विकृति के उपचार - (Treatment of Bipolar Disorder) –

कुछ वर्ष पहले तक द्विध्रुवीय विकृति का कोई ठोस उपचार नहीं था परन्तु इधर कुछ वर्षों में नैदानिक मनोवैज्ञानिकों एवं मनोरोगविज्ञानियों द्वारा किये गये प्रयासों के फलस्वरूप अब इस विकृति का उपचार निम्नांकित दो तरह की प्रविधियों द्वारा सफलतापूर्वक किया जा रहा है—

- लिथियम चिकित्सा (Lithium therapy)
- संयोजन मनश्चिकित्सा (Adjunctive Psychotherapy)

Scanned with CamScanner

▫ Lithium Therapy —

लिथियम चिकित्सा में चिकित्सक द्विध्रुवीय विकृति के रोगी को उचित मात्रा में लिथियम नामक औषधि लेने की सलाह देते हैं। लिथियम एक ऐसा औषधि है जो उन मस्तिष्क न्यूरोन्स के संचरणात्मक क्रियाओं में परिवर्तन ला देता है, जो नारइपाइनफ्राइन और सेरोटोनिन जैसे न्यूरोट्रांसमिटर का स्राव करते हैं। लिथियम द्वारा द्विध्रुवीय विकृति के उन्मादी अवस्था एवं विषादी अवस्था दोनों में ही सुधार होते पाये गये हैं।

▫ Adjunctive Psychotherapy — (संयोजक मनश्चिकित्सा) —

कुछ चिकित्सकों का मत है कि द्विध्रुवीय विकृति की चिकित्सा में सिर्फ लिथियम चिकित्सा बहुत प्रभावकारी नहीं होती है। इसलिए बहुत सारे चिकित्सक मनश्चिकित्सा को लिथियम उपचार के एक सहायक (adjunct) के रूप में उपयोग करने को प्रभावशाली माना है। इसलिए इस तरह के मनश्चिकित्सा को संयोजक मनश्चिकित्सा (adjunctive psychotherapy) कहा गया है।

विभिन्न मनोवैज्ञानिकों द्वारा किये गये शोधों से यह स्पष्ट हुआ है कि द्विध्रुवीय विकृति वाले रोगियों को विभिन्न तरह के वैयक्तिक, सामूहिक तथा पारिवारिक चिकित्सा भी प्रदान की जानी चाहिए ताकि वे उन समस्याओं से आसानी से निपट सके जो उनके उपचार में बाधा पहुँचाते हैं। इस प्रविधियों द्वारा रोगियों के पारिवारिक एवं सामाजिक संबंधों, शिक्षा एवं समस्या समाधान के तरीकों आदि पर बल डालकर उनमें ऐसा विश्वास उत्पन्न किया जाता है कि वे जल्द से जल्द इस रोग के लक्षण से मुक्त हो जायें।

इसप्रकार कहा जा सकता है कि द्विध्रुवीय विकृति के उपचार हेतु लिथियम चिकित्सा एवं मनश्चिकित्सा दोनों का संयुक्त प्रयोग अधिक उत्साहवर्द्धक परिणाम देता है।

Scanned with CamScanner